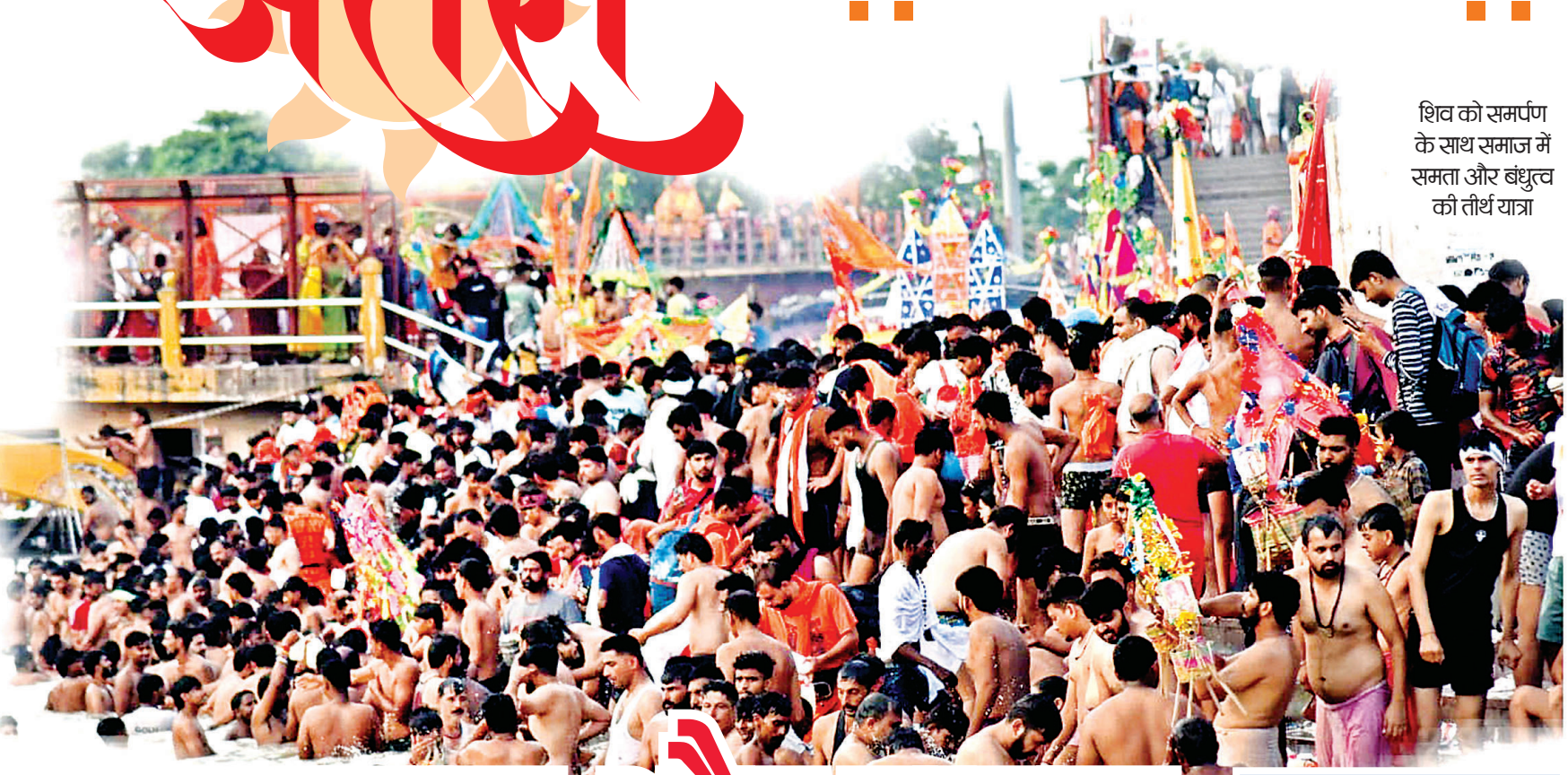

‘ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि, तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्’

शिव को समर्पण के साथ समाज में समता और बंधुत्व की तीर्थ यात्रा

परशुराम और रावण से जुड़ा है कांवड़ यात्रा का इतिहास

कांवड़ यात्रा एक प्रमुख हिंदू धार्मिक यात्रा है, जो भगवान शिव के भक्तों द्वारा उनके प्रिय माह श्रावण मास में की जाती है। कांवड़ यात्रा में श्रद्धालु (जिन्हें कांवड़िये कहा जाता है) गंगाजल लेने के लिए हरिद्वार, गंगोत्री, गौमुख या प्रयागराज जैसे पवित्र स्थलों की यात्रा करते हैं, इसके बाद वह जल शिव मंदिरों में जाकर शिवलिंग पर चढ़ाते हैं। मान्यताओं के अनुसार, भगवान परशुराम ने पहली कांवड़ यात्रा निकाली थी और वे पहले कांवड़िया थे। कहा जाता है कि भगवान परशुराम ने भोलेनाथ को प्रसन्न करने के लिए गढ़मुक्तेश्वर से गंगाजल ले जाकर उनका जलाभिषेक किया था, तभी से कांवड़ यात्रा की शुरुआत हुई थी। अन्य मान्यताओं के अनुसार, कांवड़ यात्रा की शुरुआत श्रवण कुमार ने त्रेता युग में की थी। श्रवण कुमार ने अपने अंधे माता-पिता को कांवड़ में बिठाकर पैदल यात्रा की थी और उन्हें गंगा स्नान कराने के बाद लौटते समय अपनी कांवड़ में गंगाजल लेकर आए थे, और भगवान शिव का अभिषेक किया था। कुछ अन्य मान्यताओं में कांवड़ यात्रा को लंकापति रावण से जोड़ा गया है। कहते हैं कि समुद्र मंथन से निकलने वाले विष का पान करने से भगवान शिव का गला जलने, तब देवताओं ने उनका जलाभिषेक किया। इसी दौरान रावण ने भी कांवड़ से जल लाकर भगवान शिव का अभिषेक किया था, जिससे उन्हें विष के प्रभाव से मुक्ति मिली थी।

यात्रा के कठिन नियम संकल्प शक्ति को मजबूत बनाते

- अधिकतर लोग कांवड़ यात्रा का सिर्फ धार्मिक पक्ष ही जानते हैं, जबकि इसका मनोवैज्ञानिक पक्ष भी है। कांवड़ यात्रा वास्तव में एक संकल्प है, जो श्रद्धालु द्वारा लिया जाता है। इस दौरान नियमों का पालन सख्ती से किया जाता है। कांवड़ यात्रियों के लिए किसी भी प्रकार का नशा वर्जित है। इस दौरान तामसी भोजन यानी मांस, मदिरा का सेवन नहीं किया जाता। बिना स्नान किए कांवड़ यात्री कांवड़ को नहीं छूते। तेल, साबुन, कंघी व किसी श्रृंगार सामग्री का प्रयोग भी कांवड़ यात्रा में नहीं किया जाता है। कांवड़ यात्रियों के लिए चारपाई पर बैठना एवं किसी भी वाहन पर चढ़ना निषेध है। चमड़े से बनी वस्तु का स्पर्श एवं रास्ते में किसी वृक्ष या पौधे के नीचे कांवड़ रखने की मनाही है। कांवड़ यात्रा में बोल बम एवं जय शिव-शंकर घोष का उच्चारण करना तथा कांवड़ को सिर के ऊपर से लेने तथा जहां कांवड़ रखी हो उसके आगे बगैर कांवड़ के नहीं जाने के नियम का पालन किया जाता है। इन नियमों का पालन करने से मन में संकल्प शक्ति का जन्म होता है।

लेखक : पं.मनोज कुमार द्विवेदी ज्योतिषाचार्य

24 घंटे में शिवालय पहुंचते हैं डाक कांवड़ उठाने वाले

- डाक कांवड़ थोड़ी कठिन होती है, जिसमें गंगाजल भरने के बाद 24 घंटे के भीतर जलाभिषेक के लिए उसे शिवालय में पहुंचाना होता है। इस यात्रा में शामिल कांवड़ यात्री लगातार चलते या तेजी से दौड़ते रहते हैं। यात्रा के दौरान उन्हें कोई नहीं रोकता है और उनके लिए अलग रास्ता बनाया जाता है।

दंड कांवड़ सबसे मुश्किल एक माह समय लगता

- दंड कांवड़ में कांवड़िये दंड-बैठक करते हुए कांवड़ यात्रा को पूरी करते हैं। इस यात्रा को पूरा करने में करीब एक महीने का समय लग जाता है। इसे सबसे कठिन कांवड़ यात्रा माना जाता है।

12 ज्योतिर्लिंगों या स्वयंभू शिवलिंग पर ही जलाभिषेक

- कांवड़ का जल केवल 12 ज्योतिर्लिंगों और स्वयंभू शिवलिंगों (जो स्वयं प्रकट हुए हैं) पर ही चढ़ाया जाता है। प्राण प्रतिष्ठित मूर्तियों और शिवलिंगों पर कांवड़ का जल नहीं चढ़ाया जाता। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में भक्त अपनी श्रद्धा, सामर्थ्य, समय, गंतव्य की दूरी के अनुसार गंगोत्री या हरिद्वार, ऋषिकेश से जल लेने पहुंचते हैं। श्रावण मास के शिवरात्रि पर्व से 10-12 दिन पूर्व से चलने वाला यह जन सैलाब आस्था, श्रद्धा, विश्वास के सहारे ही अपनी कठिन थकान भरी यात्रा पूरी करता है।

सिद्धार्थ नगर जिले में खोदाई के बाद चिह्नित की गई थी भगवान बुद्ध के पिता राजा शुद्धोधन की राजधानी कपिलवस्तु

सिद्धार्थ के गौतम बुद्ध बनने की कथा सुनाते यहां के खंडहर स्तूप

भगवान गौतम बुद्ध के पिता राजा शुद्धोधन की राजधानी कपिलवस्तु पूर्वी उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थ नगर जिले में स्थित है। कपिलवस्तु में ही 29 वर्ष तक गौतम बुद्ध का जीवन व्यतीत हुआ था। उनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था। इस नाते कपिलवस्तु यानी आज के सिद्धार्थ नगर को गौतम बुद्ध की क्रीड़ा स्थली कहा जाता है। तीन दशक पूर्व बस्ती जिले से नौगढ़ तहसील को अलग करके सिद्धार्थनगर जिले का सृजन हुआ था। यहां जिला मुख्यालय से 20 किलोमीटर उत्तर की ओर स्थित है पिपरहवा। इस स्थान पर गुंबदनुमा टीलों की लंबे समय तक चली खोदाई के बाद 45 वर्ष पूर्व 1980 में इस स्थल को भगवान बुद्ध के पिता राजा शुद्धोधन की राजधानी कपिलवस्तु के रूप में चिह्नित किया गया था। यहां के स्तूप और अवशेष प्राचीन कालीन राजमहल के खंडहर जैसे हैं। इससे पहले अंग्रेजों के शासन काल में साल 1898 में भी इस टीले की खोदाई हुई थी, तब भगवान बुद्ध की अस्थियों के अवशेष और बेशकीमती सामान मिले थे।

अनुयायियों का लगा रहता था यहां जमावड़ा

- सिद्धार्थनगर जब बस्ती जिले का हिस्सा था तब बुद्धिष्ट देशों के बुद्ध अनुयायियों का यहां काफी आना जाना लगा रहता था। कपिलवस्तु से कुछ दूरी पर ही नेपाल के लुंबिनी में तो वाकास कार्यों के कारण बुद्ध के अनुयायी बड़ी संख्या में पहुंचते हैं, लेकिन सिद्धार्थ नगर कम ही आते हैं।

कपिलवस्तु को भी नेपाल के लुंबिनी जैसे विकास की जरूरत

भगवान बुद्ध जहां 29 साल रहे, उसी स्थान से 16 किमी आगे नेपाल में लुंबिनी स्थित है। लुंबिनी गौतम बुद्ध की जन्म स्थली है। सिद्धार्थ नगर के खंडहरनुमा स्तूपों को संरक्षित कर कपिलवस्तु के रूप में इस स्थान के विकास की तमाम योजनाएं बनी जरूर हैं, लेकिन पूरी तरह मूर्त रूप नहीं ले पाई हैं। जनभावना यहां का विकास नेपाल के लुंबिनी की तरह किए जाने की है।

सिद्धार्थ नगर की चारों दिशाओं में बुद्ध की योग मुद्राओं के 11 स्टैच्यू

गौतम बुद्ध को योग का जन्मदाता कहा जाता है। इसे संरक्षित कर आगे बढ़ाने के लिए उनकी योग मुद्राओं के स्टैच्यू सिद्धार्थ नगर की चारों दिशाओं में स्थापित कर जिले को योग मय बनाया गया है। योग की विभिन्न मुद्राओं के 11 स्टैच्यू स्थापित किए गए हैं।

लेखक : यशोदा श्रीवास्तव

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं। कई राष्ट्रीय स्तर के समाचार पत्रों और पत्रिकाओं से जुड़े रहे हैं। भारत-नेपाल मामलों के खास जानकार हैं।

अंग्रेज ले गए थे खोदाई में मिले अवशेष, नीलामी की थी तैयारी

- अंग्रेजों के समय में साल 1898 में पिपरहवा में हुई खोदाई के समय बर्डपुर इलाके के अंग्रेज जमींदार विलियम पेपे थे। पिपरहवा तत्कालीन बर्डपुर क्षेत्र में ही आता है। उस समय यहां पर भगवान बुद्ध के अवशेष और बेशकीमती सामान मिला था। खोदाई में मिला सारा सामान जमींदार पेपे अपने साथ लंदन ले गया था। पेपे के वंशज इस वक्त हांगकांग में हैं। हांगकांग में इसी साल सात मई को बुद्ध के इन्हीं अवशेषों की नीलामी तय थी। लेकिन सिद्धार्थनगर निवासी, यूपी के पूर्व डीजीपी राज्यसभा सांसद बृजलाल ने इस नीलामी को रुकवाने और बुद्ध के कीमती अवशेषों को भारत लाने के लिए प्रधानमंत्री को पत्र लिखा। इसी के बाद शुरू हुई पहल और बीती 30 जुलाई को पिपरहवा में मिले बुद्ध के अवशेष और कीमती वस्तुएं भारत वापस आ गईं।

बोध कथा

परम आनंद का मार्ग

एक बार गुरु मछेन्द्रनाथ जी ने गोरखनाथ जी को आदेश दिया कि एक राजा को उसके राजपाट से हटाकर योग के मार्ग पर लाना है। जो राजा ऐशोआराम का शौकीन हो, राज पाठ संभालता हो, उसे त्याग करने के लिए बोलना, कठिन कार्य था। लेकिन गुरु गोरखनाथ तो अनहोनी को भी होनी कर दें।

एक राजा बड़ा दयालु और धार्मिक था। साधुसंतों की सेवा करता था। गोरखनाथ जी वहां पहुंचे और अलख निरंजन की आवाज लगाई। राजा के सेवक बाहर आए तो, कहा कि मुझे राजा से मिलना है। राजा ने सोचा ऐसा कौन संत है जो, सीधा उससे मिलना चाहता है। गुरु गोरखनाथ ने राजा से कहा कि राजन, आपके महल में बहुत दुर्गंध आ रही है। राजा ने कहा, आप कैसी बात कर रहे हैं, यहां तो प्रतिदिन इत्र डालकर सफाई होती है। चारों तरफ खुशबू ही खुशबू है। इस पर गोरखनाथ जी ने कहा कि राजन, यह विषय-वासना भोग-विलास की दुर्गंध है, जो आपको नजर नहीं आएगी। आप इसमें लिप्त हो चुके हो। चलिए मेरे साथ मैं आपको दिखाता हूं कि दुर्गंध क्या होती है। गोरखनाथ जी, राजा को एक चमड़े वाले के पास ले गए। राजा ने कहा यहां तो बहुत दुर्गंध है। गोरखनाथ जी ने चमड़े वाले वाले से पूछा, यहां तो बहुत दुर्गंध है आप कैसे रहते हो। इस पर उसने कहा, कैसी दुर्गंध? यहां तो प्रतिदिन सफाई होती है। हमें तो कोई दुर्गंध नहीं आती। यहां से गोरखनाथ जी राजा को एक मांस की दुकान के पास ले गए। वहां भी बदबू आ रही थी। गोरखनाथ जी ने मांस वाले से पूछा कि आप इतनी बदबू और गंदगी भरी जगह में कैसे काम करते हो। दुकानदार ने कहा कि आप कैसी बात कर रहे हो। यहां तो कोई दुर्गंध नहीं है। रोज इत्र डालकर सफाई होती है। अब गोरखनाथ जी ने राजा को समझाया कि जिस तरह मांस और चमड़े वाले को अपनी दुकान बदबू नहीं आती, खुशबू का एहसास होता है। वैसे ही आपको भी राजसी भोग-विलास में खुशबू और आनंद का एहसास होता है। असली आनंद तो परम आनंद है जो, कभी नष्ट नहीं होता। उसके आगे सभी भोग विलास छोटे हैं।

लेखक: जय शंकर मिश्र "सव्यसाची"

इस सप्ताह के व्रत और पर्व

- 5 अगस्त – अंतिम मंगला गौरी व्रत
- 6 अगस्त – प्रदोष व्रत
- 8 अगस्त – वर लक्ष्मी व्रत
- 9 अगस्त – रक्षाबंधन का पर्व
- 12 अगस्त – कजरी तीज, संकष्ठी चतुर्थी

कजरी तीज : पति के प्रति प्रेम का उद्गार और श्रृंगार का त्योहार

- सावन मास की समाप्ति के साथ ही भाद्रपद माह शुरू होता है। कजरी तीज पर्व भाद्रपद कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाता है। विवाहित महिलाएं और अविवाहित कन्याएं श्रद्धा और भक्ति के साथ व्रत रखकर इस दिन माता पार्वती और भगवान शिव की पूजा-अर्चना करती हैं। मान्यता है कि मां पार्वती ने भगवान शिव को पति के रूप में प्राप्त करने के लिए इस व्रत की शुरुआत की थी। यह व्रत करने से विवाहित महिलाओं को पति की लंबी आयु का आशीर्वाद मिलता है। अविवाहित कन्याओं को मनचाहा वर प्राप्त होता है।

तुलसी का पूजन करना इस माह शुभ, माता लक्ष्मी होती हैं प्रसन्न

- भाद्रपद मास हिंदू कैलेंडर का छठा महीना है, इसकी शुरुआत 10 अगस्त से हो रही है, समापन 7 सितंबर को भाद्रपद पूर्णिमा पर होगा। इस दौरान कई महत्वपूर्ण व्रत और त्योहार पड़ेंगे। कहा जाता है कि इस माह में तुलसी के पौधे की पूजा करना काफी शुभ होता है। इससे माता लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं। इसी महीने भगवान कृष्ण के जन्म का उत्सव श्रीकृष्ण जन्माष्टमी मनाया जाता है। इसके बाद बड़ा त्योहार भगवान गणेश को समर्पित गणेश चतुर्थी आता है।

पीतांबरा पीठ : जप-साधना का केंद्र, अनाम संत की तपोस्थली

उत्तर प्रदेश के झांसी से जुड़ा मध्य प्रदेश का छोटा सा जिला है दतिया। यह राजा-रजवाड़े, साहित्य, प्राकृतिक सौंदर्य, इतिहास और अध्यात्म में इतना समृद्ध रहा है कि बुजुर्गों की जुबान से आज भी ये कहावत सुनने को मिल जाएगी ‘झांसी गले की फांसी, दतिया गले का हार। ललितपुर न छोड़िए, जब तक मिले उधार।’ पौराणिक मान्यताओं के अनुसार दतिया को महाभारत कालीन राजा वक्रदंत ने बसाया था। राजशाही में ये राजा गोविन्द सिंह की रियासत थी। लेकिन आज पहचान माता पीतांबरा शक्तिपीठ के कारण जप और साधना के बड़े केंद्र के रूप में होती है। यहां तंत्र शास्त्र की दस महाविद्याओं में से दो, देवी बगलामुखी (पीतांबरा) और धूमावती एक ही परिसर में स्थापित हैं।

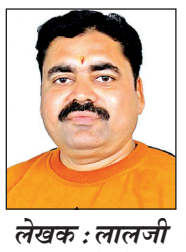

लेखक : लालजी बाजपेयी

पीतांबरा शक्तिपीठ को स्थापित करने वाले स्वामी जी की ख्याति उच्चकोटि के साधक, संत और राष्ट्रप्रेमी के रूप में थी। वर्ष 1929 में दतिया आने के बाद उन्होंने यहां 50 वर्ष बिताए। वह संस्कृत, पाली, बांग्ला, अंग्रेजी, फारसी व उर्दू भाषा के साथ ज्योतिष के मूर्धन्य विद्वान थे। तंत्र, मंत्र योग, विज्ञान, ध्यान में भी महारथ हासिल थी। वह भक्तों को एक ही संदेश देते थे, माता की शरण में जाओ, उन्हीं का नाम जपो। जब तक खाते में कुछ जमा नहीं करोगे, ब्याज कहां से मिलेगा। स्वामी जी ने तांत्रिक पंचांग का प्रकाशन शुरू कराया, जो और कहीं नहीं मिलता। 1935 में मां पीतांबरा की स्थापना के बाद से ही भक्त उनसे धूमावती मां की स्थापना की जिद करने लगे, लेकिन वे टाल जाते थे। आखिरकार 1978 में उन्होंने धूमावती माता की स्थापना कराई।

बिना नंदी का शिवालय

पीतांबरा माता के सामने सफेद संगमरमर से बना अमृतेश्वर शिव मंदिर है। इसमें शिवलिंग के सामने नंदी नहीं स्थापित हैं। ये स्वामी जी की समाधि है।

.. और लौटने लगी चीन की सेना

बताते हैं 1962 में जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया तो स्वामी जी व्यथित हो उठे। भारत की विजय के लिए उन्होंने राष्ट्र रक्षा यज्ञ कराया। जिस समय यज्ञ की अंतिम आहुतियां चल रही थीं, रेडियो पर समाचार आया कि चीनी सैनिक पीछे लौट रहे हैं। धूमावती मंदिर के सामने बनी यज्ञशाला में शिलालेख पर इस घटना का जिक्र है।